मौर्य साम्राज्यवाद के राजनीतिक विफलता का कारण एक ऐतिहासिक अध्ययन

पिंकी कुमारी
शोधार्थी, इतिहास विभाग,
ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा
ग्राम+पो0– मटिहानी
जिला–बेगुसराय, (बिहार)

सारांश

छठी शताब्दी ई0 पू0 से चौथी शताब्दी ई0 पूर्व के बीच उत्तर भारत में वैदिक गुण के विघटन से जनपदीय राज्य का उदय होना शुरू हुआ था। इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका वैदिक गणों (योद्धा द्वारा शासित कबीला) की भूमिका रही थी। इन्ही लोगों द्वारा कबीले युद्ध में विजय से अंतर कबीला राज्य का उदय होना शुरू हुआ। था। फलतः छठी शताब्दी ई0 पू0 से अन्तर कबीला राज्य से जनपदीय राज्य का उदय शुरू हुआ। अतः विंध्य के उत्तर 15 जनपदीय राज्य का उदय हुआ था। इसमे सबसे अधिक संख्या मध्यगंगाघाटी में था। मध्यगंगाघाटी का आर्थिक संसाधन से सम्पत्र तीन जोड़ी जनपदों के बीच संधर्ष शुरू हुआ। यह जोड़ी थी अंग–मगध, काशी–कौशल और वत्स–अवंति। मगध इन तीनों जोड़ी क बीच मगध की आर्थिक सम्पन्नता, विशाल प्राकृतिक संसाधन और वर्ण व्यवस्था विहीन समाज के चलते उद्‌भट योद्धाओं के होने से यह सबसे अग्रसर रहा था। मगध को वैदिक साहित्य में व्रात्य देश कहा गया है। इसके लिए उसी साहित्य में दश्यु शब्द का उपयोग पाया जाता है। इसमें स्पष्ट होता है कि मगध गैर आर्य आबादी का भू–भाग रहा था। पाली साहित्य में भी ऐसा ही विवरण मिलता है कि मगध में अनार्य किसान, शिल्पी, पशुपालक और खेतीहर मजदूरों की बस्तियाँ फैली हुई थी। पाली साहित्य में ही मगध के प्रथम ऐतिहासिक राज्य पुरूष का नाम बिंबिसार आया है। इसके बारे में कहा गया है। कि वह 80 हजार गाँवों का अधिपति रहा था। यह संख्या अतिरंजित हो सकती है। किन्तु पुरातात्विक खोजों से भी ज्ञात हुआ है कि मगध जिसकी प्रारम्भिक सीमा दक्षिणी बिहार में मुंगेर की पहाड़ी के पश्चिम से तथा सोन नदी के पूरब में फैला हुआ था, विशाल टाल का क्षेत्र रहा था। दक्षिण में गया और औरंगाबाद की पहाड़ियों से घिरा यह भू–भाग सुरक्षित ही नहीं, बल्कि प्राकृतिक संसाधन जैसे हजारीबाग के साल की लकड़ी, राँची के लौह अयस्क भंडार तथा ग्रेनाइट जैसे मजबूत पत्थर की उपलब्धता से संपन्न रहा था। इसकी तुलना में मध्यगंगाघाटी के शेष जनपदों में मगध सबसे सम्पत्र महाजनपद रहा था। यहीं इसके साम्राज्यवादी प्रसार का मुख्य आधार बना था।

मूल–शब्दः जनपदीय, दश्यु, व्रात्य देश, केन्द्रीकृत, मध्यगंगाघाटी, शिल्पी, पशुपालक, भूस्वामी, प्राकृतिक।

प्रस्तावना

इतिहासकारों ने मौर्य राज्य और राजनीति की विफलताओं को मौर्य साम्राज्य के विघटन और पतन से जोड़कर व्याख्या करने का प्रयास किए है, जबकि मौर्य राज्य और राजनीति ने जनपदीय राज्य से भारत के राज्य और राजनीति से एक नया आयाम स्थापित किया था, जो भारत को आर्थिक, राजनीतिक विचारधारा के तहत सफल राज्य और राष्ट्र के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाया था।[1] मौर्या के पूर्व राज्य का उद्देश्य सत्ताप्राप्ति, युद्ध से सत्ता प्रसार करना और कर वसूल कर सत्ता का संचालन करना रहा था। इसलिए भारत में राज्य और राजनीति खंडित तथा क्षेत्रीय सीमा में बँधी रही थी, जबकि मौर्या ने भारत की प्राकृतिक, भौगोलिक सीमा में राज्य का निर्माण किया था, ताकि इसे एक राष्ट्र का रूप दिया जा सके।[2] अतः मौर्य राज्य और राजनीति भारत के राजनीतिक इतिहास में एक नया विकास का द्योतक रहा है। अतः इस साम्राज्य क पतन से मार्य राज्य और राजनीति की समाप्ति नहीं हुई थी, बल्कि अगली सदियों के राजवंश फेरबदल के साथ मौर्य राज्य के प्रशासनिक व्यवस्था को अपनाते रहे।

किन्तु मौर्य राज्य और राजनीति की आर्थिक प्रगति की नीति के चलते कृषि, शिल्प, व्यापार, कला आदि के क्षेत्र में जो प्रगति हुई थी, उसके चलते आर्थिक व्यवस्था ने एक विशाल और संजटिल रूप ग्रहण कर लिया था। जिस मौर्य राज्य की केन्द्रीकृत, आर्थिक नीति के तहत व्यक्तिगत सम्पति के संग्रह पर नियंत्रण रहा था, जो नई–नई नदी द्रोणियाँ तैयार हो रही थी, मौर्य राज्य उस पर अधिपत्य कर सीता गाँव बसाने लगा था। सीता गाँव की भूमि किसानों को 1/4 से लेकर 1/2 भूराजस्व पर दिया जाता था। कृषकों का उस पर व्यक्तिगत स्वामित्व न

होकर राज्य का स्वामित्व होता था। कृषकों की संख्या बढ़ाने क लिए वैश्य ही नहीं, शूद्रों को भी कृषक और खेतीहारी मजदूर बनाया जाने लगा था।[3] यह कहना बहुत सही नहीं है कि मौर्यों की अर्थव्यवस्था Forced labour किन्तु बेगारी नहीं, बल्कि कम मजदूरी देकर काम लेने पर निर्भर रहा था। ऐसी स्थिति में जो प्रगति मौर्यों के समय हुई थी, वह संभव नहीं था और फिर भी अर्थशास्त्र में विवरण मिलता है कि मौर्यों क अधीन minimum मजदूरी 200 पण वार्षिक हुआ करता था। इसके बदले राजकीय खजाना से नमक, तेल, अन्न और कपड़ा मुहैया होता था। अतः सीता गाँव के कृषक कृषि अध्यक्ष के अधिन नियुक्त कर्मचारी को निर्धारित भू–राजस्व दते थे। अर्थशास्त्र में यह भी विवरण आया है क मौर्य राज्य जनपद के निर्माण में गाँवों का समूह बनकर किसानों को बसाता था और उसे हल, बैल, बीज से ही मदद नहीं करता था, बल्कि उसके स्वास्थ्य पर भी ध्यान रखता था।[4] यह भी उल्लेख आया है कि सीता गाँव से अधिक से उपज के लिए नट, बरवोवा जैसे मनोरंजन करने वाले को जाना मनाही था। इसका उद्देश्य यह था कि सीता गाँव से अधिक से अधिक उपज प्राप्त करना। इस तरह मौर्य राज्य रातकीय कृषि फार्म की स्थापना को ठोस आर्थिक आधार देने का प्रयास किया था। यह अवश्य एक नए तरह की आर्थिक व्यवस्था की शुरूआत रही थी।

फिर भी ऐसे विवरण मिलते है। कि सीता गाँव के बाहर के गाँवों में बड़े–बड़े भूस्वामी उदित होने लगे थे। उनके प्रसार पर सीता गाँव के चलते रोक लग गई थी । इससे ऐसे बड़े भूस्वामी, व्यापारी और शिल्पी मौर्य राज्य की केन्द्रीकृत आर्थिक नीति के खिलाफ अवश्य हो गये होंगे और यह तबका मौर्य आबादी का सबसे प्रभावशाली तबका होने क चलते उत्तर मौर्यो की स्थिति कमजोर होने पर राज्य का साथ देने के बदले, विघटनकारी का साथ देने के चलते मौर्यों की केन्द्रीकृत आर्थिक नीति और व्यवस्था का विरोध होना शुरू हो गया था।[5] चूँकि मानव श्रम और उसके औजार तथा साधन में जो वृद्धि हो रही थी, उससे मौर्य साम्राज्य का पुराना आर्थिक आधार बदलने लगा था। अतः इस नए आधार पर बड़े भूस्वामी, नये योद्धावर्ग, शिल्पी और व्यापारी मौर्य साम्राज्य के केन्द्रीकृत आर्थिक नीति को व्यक्तिगत सम्पत्ति के विकास में बाधा मानने के चलते विरोधी बनने लगे थे। अतः मौर्यों द्वारा व्यक्तिगत सम्पत्ति के संग्रह की छूट नहीं दिए जाने के चलते मौर्य राज्य और राजनीति संकटग्रसत होने लगा था। इस अर्थ में मौर्य राज्य की आर्थिक नीति में विकेन्द्रीयता में छूट नहीं रहने के चलते विफलताएँ आने लगी। जबकि कुछ विद्वान मानते है कि कौटिल्य ने कई छोटे–छोटे आर्थिक क्षेत्र में व्यक्तिगत उद्यमों के छुट की व्यवस्था दिए थे। शिल्पी और व्यापारियों की भी छुट रही थी। सीता गाँव के अतिरिक्त कृषक को भी सम्पत्ति थी, जिस अनुपात में व्यक्तिगत सम्पत्ति संग्रह करने वाले लोग होने लगे थे। वह उस अनुपात में छुट, बाधक प्रतित होती रही इसलिए लोगों में केन्द्रीयकृत अर्थव्यवस्था का विरोध करने लगे और विकेन्द्रिता का समर्थन करने लगे। अतः इस अर्थ में मौर्य राज्य की आर्थिक नीति की कठोरता और केन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था में व्यक्तिगत सम्पत्ति संग्रह पर पाबंदी उनकी विफलता का कारण बना गया था।[6] चूँकि मौर्यों ने स्वयं तकनीकी, लोह औजार और संसाधनों में इतना विकास कर दिया था कि व्यक्तिगत सम्पत्ति संग्रह का होड़ युगधर्म बन गया था। इस पर रोक मौर्य राजनीति की विफलता का कारण बना था। उस प्राचीन जमाने में आधुनिक तरह के लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना युग से बहुत आगे की बात रही थी। अतः उसके खिलाफ संपत्ति का टकराव स्वभाविक था।

मौर्यों ने अपने आर्थिक–राजनीतिक सिद्धान्त के तहत जिन जनकल्याणकारी कार्यों को शुरू किया था, उससे लोगों कि सुख–सुविधा में वृद्धि होने लगी थी। इस वृद्धि क परिणामस्वरूप लोगों में आर्थिक–सामाजिक चेतना का संचार होने से लोग राज्यनियंत्रित अर्थव्यवस्था से मुक्ति चाहने लगे थे। खासकर कृषक, शिल्पी और व्यापारी को राज्यनियंत्रित अर्थव्यवस्था में अपनी वृद्धि की गुंजाइस कम नजर आ रही थी। नई–नई नदी द्रोणियों पर सीता गाँव बसने से स्वतंत्र कृषक के उद्योग से शिल्पियों को बाधा महसूस हो रही थी। चूँकि उस समय शिल्प, उद्योग का सबसे बड़ा उपभोगता राज्य स्वयं था। जो अपने आवश्यकता की पूर्ती अपने उद्योग और शिल्प से पुरा करता था।[7] अतः स्वतत्र शिल्पियों को अपने गाँव और आस–पड़ोस मे शिल्प उत्पादन की खपत इसलिए कम थी कि लोग नई आर्थिक व्यवस्था से परिचित ही हो रहे थे। सीता गाँव के बाहर के कृषक और शिल्पियों को राज्य की ओर से कितनी मदद मिल रही थी। इसका जिक्र न तो कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मिलता है और न ही अशोक के अभीलेख में इसलिए मौर्यों के समय राजसत्ता से जुड़े हुए लोग मौर्य राज्य का अधिकाधिक फायदा लेने में समर्थ थे। अतः समाज का यह विभाजन मौर्य आर्थिक, राजनीतिक नीति की व्यवहारिक पूर्णता का रूप नहीं ले पाया था। इसलिए एक छोटा सा तबका मौर्य राजसत्ता से जुड़कार लाभानिवत हा रहा था, तो वहीं बड़ा तबका राजसत्ता के शोषण का शिकार बना था। श्रमिक जिनसे जबरिया श्रम लेने की बात अर्थशास्त्र में भी मिलता है, उनकी हालत पतली हो रही थी। इसलिए मौर्यों के खिलाफ विकेन्द्रित सत्ता के चाहने वाले बड़े भूस्वामी, शिल्पी और व्यापारी का

विरोध हो सका।[8] अतः मौर्य राज्य और राजनीति की आर्थिक–रजनीतिक सिद्धान्त और आदर्श कौटिल्य के अर्थशास्त्र की पुस्तक सिमटा रहा और मौर्य राज्य सेवानिवृत राजकीय वम्पत्ति का वितरण आवश्यकता वाले लोग के बीच नहीं कर पाया था। इसलिए अर्थशास्त्र का आर्थिक–राजनीतिक सिद्धान्त पुस्तकीय अधिक रहा, व्यवहार में कम।

पाली साहित्य अशोकवादन माला से ज्ञात होता है कि मौर्य प्रशासक अधिकारी लोभी और भ्रष्ट हो गए थे। मौर्य राज्य की आर्थिक नीति से मौर्य खजाने में आने वाले राजस्व संग्रह से लेकर व्यय में अनियमितता के खिलाफ ही तक्षशिला के लोगों ने मौर्य सत्ता का विरोध किया था।[9] इसी के सुधार के लिए अशोक ने तीन और पाँच वर्ष में स्थानांतरण का नियम लागु किया थां लेकिन यह कितना लागु हुआ यह ज्ञात नहीं हो पाया है। इसी तरह अशोक के प्रथक कलिंग शिक्षा प्रज्ञापन में जिस उच्च राजत्व के आदर्श को अशोक ने प्रचारित करवाया था। इसमें मौर्य अधिकारी कितना चुस्ती के साथ सार्वजनिक हित का काम कर पाए थे, इसको आँकन का कोई साधन ज्ञात नहीं हुआ है।[10] लगता है इसमें कमी क चलते ही अशोक को धम्म महामात्रों की नियुक्ति करनी पड़ी थी। ये धम्म महामात्र इस बात की तहकीकात के भी अधिकारी थे, कि राज्य के निर्देशों का पालन अधिकरीगण करते है या नहीं। इससे लगता है कि कौटिल्य के अर्थशास्त्र से लेकर अशोक के अभिलेख में मौर्य राज्य और रजनीति से लेकर तथा प्रजा कल्याण की नीतियों की जितनी बात का उल्लेख मिलता है, व्यवहार में उसके पालन में कमी अवश्य हो रही थी।[11] अशोक के धम्म लेखों में अल्प संचय और अल्प व्यय की बातों से भी लगता है कि लोगों में धन के प्रति मोह और ऐशों–आराम से रहने की प्रवृति के पीछे धन–अर्जनक का मोह अधिक हो चला था, जिससे आर्थिक–सामाजिक तनाव से लोग बाधक बनने लगे थे। इसके चलते मौर्य सत्ता से जुड़े लोग ही मौर्य नीतियों को विफल करने में आगे आ रहे थे।[12] फलतः मौर्य नीतियों के संचालन की जिम्मेदारी जिन पर रही थी, वहीं उसके विफलता का कारण बनने के चलते मौर्य राज्य की राजनीतिक आदर्श देखने–सुनने में जितना अच्छा लगता है, वह शास्त्रीय अधिक रहा, व्यवहारिक कम। फलतः इसके चलते मौर्य राजनीति में विफलता के लक्षण लगता है, वह शास्त्रीय आधिक रहा, व्यवहाहिक कम। फलतः इसके चतले मौर्य राजनीति में विफलता के लक्षण आने लगे थे।

मौर्य राज्य भारतीय उपमहाद्वीप की विशाल सीमा में फैलाया गया था, जिसके अंतर्गत उस समय भी बड़ी संख्या में जनजातीय लोग उत्तर भारत से लेकर दक्षिण–पश्चित भारत में फैले हुए थे। ये लोग कबीलाई तंत्र और कबीलाई नेता के अधीन जीवन जीने को अभ्यस्त रहे थे। नई राजनीतिक व्यवस्था आने से इनके बीच नई व्यवस्था फैल नहीं रहा था। जबकि बड़ी संख्या में अशोक ने धर्म महामात्रों को राज्य की नई व्यवस्था की समझ फैलाने की नियत से नियुक्त किया था और पुरे मौर्य साम्राज्य के कोने–कोने में अपने धम्मलेखों की प्रतियाँ लगवाया था। इस सबके बावजूद मौर्य रज्य की राजनीति, उसके उद्देश्य और आदर्श इतनी उच्च आर्थिक–राजनीतिक व्यवस्था रही थी कि उस प्राचीन युग में सामान्य लोगों के बौद्धिक स्तर से बहुत ऊपर की चीज थी। पुरे–पुरे भारतीय समाज श्रमजीवी होकर आर्थिक प्रगति के मार्ग पर आरूढ़ नही हुआ था। आदिवासी, शिकारी, जनजातीय कबीले की लोगों की संख्या अधिक रही थी। यहीं कारण रहा था कि अशोक को जंगल जातियों के लोगों को डाँटना पड़ा था कि वे मत भूले कि अशोक तलवार छोड़ दिया है। बौद्धवादी होने के बावजूद यह राजसत्ता का पक्षधर था और कौटिल्य ही नहीं अशोक भी मानता था कि राजसत्ता के विकास और प्रसार से ही समाज आर्थिक तौर से सम्पन्न और सामाजिक तौर से व्यवस्थित तथा नैतिक आचरण वाला हो सकता है।[13] इसलिए अशोक को अपने धम्म लेखों मे साथ चरित्र के नैतिक नियमों, आचरणों की अधिक चर्चा करनी पड़ी थी। किन्तु उस समय भारतीय जनसंख्या की बौद्धिक स्थिति मौर्य राज्य और राजनीति के उद्देश्य और आदर्शो को पुरा करने की क्षमता से बहुत नीचे रहा था। अतः कौटिल्य और अशोक के लाख चाहने के बावजूद मौर्य रज्य की रजनीतिक आदर्श और उद्देश्यों को उस समय पुरा नहीं किया जा सकता था।[14] इसलिए व्यवहार में यमु के अनुकूल न होना मौर्य राज्य और राजनीतिक के विफलता का कारण बना था।

कौटिल्य के आर्थशास्त्र में जिस तरह भारतीय उपमहाद्वीप में एक सबल राज्य और सम्पन्न राष्ट्र के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की रचना की थी और जिसमें कई सुधार अशोक ने मानवीय आचरण के अनुसार ढ़ालना चाहा था। वह प्राचीन विश्व में एक अनूठी राजनीतिक चिंतन अवश्य था। वह उस समय की सामाजिक और बौद्धिक स्तर से आगे की बात रही थी। आर्थिक नीतियों के चलते मौर्य राज्य को सैनिक और आर्थिक दृष्टि से सबल और सम्पन्न अवश्य बनाया गया था, जिसके चलते अशोक के मृत्यु के पचास वर्ष बाद ही पश्चिम और मध्य एशिया के लोगों की आक्रमण करने की हिम्मत हुई। तब भी उसे पश्चिमोत्तर भारत से आगे बढ़ने नहीं दिया गया था। इतना ही नहीं कबिलाई लोगों की विकेन्द्रिकरण को दबाए रखा गया। किन्तु केन्द्रीकृत आर्थिक

नीति का लाभ जो कौटिल्य और अशोक प्रजा को देना चाहता था, उसके लोभी कर्मचारियां के चलते पूरा नहीं हो सका। जबकि कौटिल्य के अर्थशास्त्र में उनके ऊपर कई वाबंदियों का प्रावधान था। किन्तु उसको लागू करने वाली मिशनरी मौर्य मंत्रीमंडल जिसे कौटिल्य ने 18 प्रमुख विभागों में बाँटा था, सक्रिय ढ़ग से काम नहीं कर पाया था। इसलिए मौर्य राजनीति कारगर ढंग से लागु नहीं ले सका था। यहीं मौर्य राजनीति की विफलता का कारण बना था। इस तरह मौर्य राज्य और राजनीतिक अपने युग से आगे की बाद रही थी और उसे लागू करने वाली मेशिनरी व्यहारिक रूप में बन नहीं पायी थी। व्यक्ति संपत्ति का मोह केन्द्रीकृत अर्थव्यवसायी और शासन को सहन करने को तैयार नहीं हुआ था। रोमिला थापर ने भी मानी है कि मौर्य आर्थिक प्रगति का लाभ उठाने वाला बड़ा भूस्वामी, शिल्पी ओर व्यापारी सबल मौर्य केन्द्रीकृत राजव्यवस्था को अपने मार्ग में बाधक मानकर उसका साथ नहीं दिया। फलतः मौर्य राज्य और राजनीतिक विफल कर दिया गया।

इस तरह मौर्य राज्य और राजनीति कौटिल्य जैसे आर्थिक–राजनीतिक सिद्धान्त को लागू करने के लिए भारत की भौगोलिक सीमा में जिस विशाल भारतीय मौर्य साम्राज्य की स्थापना किया गया था। वह एक तो अपनी विशालता के कारण, भौगोलिक बनावट के कारण और आर्थिक–सामाजिक विकास में असमानता के कारण और इन सबसे उपजा बौद्धिक स्तर का नीचा रहना मौर्य राज्य की राजनीति के उद्देश्य और आदर्श की विफलता का कारण बना था। किन्तु प्राचीन भारतीय राजनीतिकशास्त्र में मौर्य राज्य और राजनीति की सबसे बड़ी अहमियत रही थी कि उसने उस प्राचीन जमाने में भारत के राजनीतिक सत्ता पर बैठने वाले लोगों के राज्य के विकास के साथ–साथ प्रजा का राजतंत्रता के अंतर्गत ही सभ्य–सम्पत्र करने का एक उत्कृष्ट राज्यदर्शन दिया था। किन्तु ब्राह्मणवादी समाज जो मौर्य राज्य की राजनीति से सबसे अधिक आहत हुआ था। अंतिम मौर्य राजा वृहद्रथ की हत्या कर ब्राह्मण पुनरूत्थान को शुरू किया। फलतः उस पुनरूत्थान और बाह्य आक्रमण के चपेट में तथा दोनों की मिली–जुली नीति और व्यवस्था से सामंती समाज का विकास मौर्य राज्य और राजनीति को विफल कर दिया। सीता गाँव के अधिकारी बड़े भूस्वामी बन सत्ता में भागीदारी के लिए केन्द्रीकृत सत्ता का विरोध किया। उसी तरह व्यापारी और शिल्पी भी अपने शिल्प और व्यापार में छुट्टा लाभ के लिए मौर्य राज्य और राजनीति का विरोधी बन बैठे। फिर मौर्य राज्य में जहाँ तक भारत के आर्थिक विकास का प्रश्न था। ये काम बहुत दूर तक पूरा कर लिया था, किन्तु उसका लाभ सामान्य लोगों के बीच नहीं पहुँचने दिया गया और मौर्य राज्य के बड़े कर्मचारी उसे हड़पकर मौर्य खजाना वाला राज्य खजाने के अभाव में विफल हो गया। इस तरह व्यवस्था और लोग दोनों मौर्य राजनीति की विफलता का कारण रहे थे।

निष्कर्सः

मौर्य राज्य और राजनीति का अध्ययन प्रायः भारत के इतिहास पर कलम उठाने वाले प्रायः भारत के इतिहास पर कलम उठाने वाले प्रायः प्रत्येक लेखकों ने किये हैं। उसमे से कुछ ने तो चंद्रगुप्त चाणक्य की जोड़ी पर कौटिल्य और उसके अर्थशास्त्र पर अशोक उसके धम्म नीति पर स्वतंत्र पुसतके भी लिखी है लेकिन ये तमाम अध्ययन में इस बात की कमी रही की कोशिश नहीं की है। स्वयं कौटिल्य के अर्थशास्त्र को लेकर लंबा विवाद चलता रहा है। आर0 शाम0 शास्त्री के अतिरिक्त अर्थशास्त्र को लेकर आधा दर्जन तक पुस्तक लिखी गई है, इसके नामों की चर्चा पीछे की गई है। यहाँ इतना बतला देना आवश्यक है कि यह ग्रथं कोई उसके नामें की चर्चा पीछे की गई है। यहाँ इतना बतला देना आवश्यक है कि कौटिल्य के अर्थशास्त्र की तिथि और प्रमाणिकता को लेकर चले बहसों से स्पष्ट हो गया है कि यह ग्रन्थ कोई जाली ग्रंथ नहीं था और मौर्यो के समय पुनः पाअलिपुत्र में अर्थशास्त्र में अर्थशास्त्र के स्कूल की स्थापना और उसको मौर्यो के बाद चलते रहने का प्रमाण था कि कौटिल्य के अर्थशास्त्र की मूल काया में बिना परिवर्तन किये। उसका अध्ययन–अध्ययन होता रहा, जिसका उल्लेख अन्य भारतीय साहित्य में मिलता है। अतः कौटिल्य का अर्थशास्त्र मौर्य राज्य और राजनीति का अध्ययन का मूल स्त्रोत है। उसमें अशोक का अभिलेख, पाणिनी की अष्टाध्यायी, बौद्ध धर्म के प्रारंभिक पाली साहित्य से भी मौर्य राज्य और राजनीति की विचारधारात्मक अध्ययन में सहयोग मिलता है।

मौर्य राज्य और राजनीति का अध्ययन बहुत व्यापक रहा है। कई विद्वानों ने प्राचीन भारतीय रजनीति और राजनीतिशास्त्र का अध्ययन करते समय मौर्य राज्य और राजनीति को समेटने की कोशिश करते रहे है।, किनतु इनमें से किसी भी रचनाओं में मौर्य राज्य को एक जारनीतिक विचारधारा के रूप में व्याख्या नहीं किया गया है। कारण भी रहा कि इतिहास पुर्नलेखन में सामाजिक विकास की प्रक्रिया को विचारधारा के तहत आँकने की पद्धति का प्रचलन बहुत नया रहा डा0 रामशरण शर्मा ने अपनी पुसतक पोलिटिकल आइडिया एण्ड इन्सटीट्युसन्स" में बिवचारधारा को बहुत बड़े पैमाने पर भारत के प्राचीन राजनीतिशास्त्र की व्याख्या में खेजने की कोशिश किये है।

उसके छोटे अंश में मौर्य राज्य और राजनीति को वैचारिक तौर से देखने का प्रथम प्रयास किये हैं। उसी से अनुप्रेरित है यह शोघ प्रबंध पूरे तौर पर मौर्य राज्य और राजनीति के विचारधारा के खोज का प्रयास किया गया है।

मौर्य राज्य और राजनीति की विफलता कई विद्वान मौर्य सम्राट की पतन के कारणों में मौर्य राज्य और राजनीति भारत के एि समय से कुछ आगे की बात रही थी। मात्र गंगाघाटी की भौतिक स्थिति मौर्य राज्य की आर्थिक नीति के अनुकूल ही बन पाई थी। शेष पश्चिमोत्तर भारत, पश्चिम भारत, दक्षिण और पूर्वी भारत आर्थिक और सामाजिक तौर से पिछड़ा हुआ। अतः एक प्रौढ़ आर्थिक–राजनीतिक तंत्र को पूरे भारत में लागू करना संभव नहीं हो पाया था। अशोक के अभिलेख में आधे दर्जन से अधिक जनजातीय समूहों की चर्चा मिलती है। जो अपने पुराने कबीलेतंत्र में अभ्यस्त रहे थे, दूसरी ओर आर्थिक समृद्धि का लाभ उठाकर कुछ लोग बड़े भूस्वामी, व्यापारी और शिल्पी वर्ग बन गऐ थे जिनके बीच व्यक्तिगत वम्पति की चाह के मार्ग में मौर्य राजतंत्र का केन्द्रीकृत राज्य की जगह विकेन्द्रित सत्ता के आकांक्षी होने लगे थे। अतः नवधनाढ्य का उदय को मौर्य राज्य और राजनीति गँवारा नहीं रहा था।

फिर एशिया जैसे महादेश मे मौर्य राज्य अपने तरह का अकेला राज्य रहा था, पश्चिम और मध्य एशिया में जनजातिय राज्य उठ–पटक की स्थिति में रहा था। अतः अकेले मौर्य राज्य का उनके बीच टिका रहना संभव नहीं रहा था। फिर मौर्य राज्य और राजनीति इतनी नवीन व्यवस्था रही थी कि उसका संचालन सैन्यतंत्र से अधिक नीतितंत्र पर करना रहा था। अतः युग से आगे होने की चीज के चलते वह लोगों ग्राह्य नहीं हो सका। फलतः मौर्य राज्य और राजनीति अनुकूल परिस्थिति अपने लिए नहीं बना पाने के चलते विफल हो गई थी।

संदर्भ–ग्रंथः

- जी0 वी0 गोखले–The maurya's gave the country a political unity and a cultural synthesis.
- रामशरण शर्मा–प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा एवं संस्थाएँ– पृ0–162–63.
- वाचस्पति गैरोला– कौटिल्य अर्थशास्त्रम् पृ0–76–78.
- वहीं–पृ0–105–07.
- रोमिला थापर–अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन– पृ0–186–87.
- वहीं– पृ0–189–90.
- रामशरण शर्मा–प्रारंभिक भारत का आर्थिक एवं सामाजिक इतिहास– पृ0–146–47.
- रामशरण शर्मा–शूद्रों का इतिहास– पृ0–178–80.
- एच0 सी0 राय चौधरी–प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास– पृ0–105–06.
- डी0 आर0 भंडारकर–अशोक–पृ0–218–20.
- वहीं–पृ0–221–22.
- श्रोमिला ाापर– दि मौर्याज रिप्रजेंटेड– नई दिल्ली–2002– पृ0–118–20.
- राधा कुमुद मुखर्जी– अशोक– पृ0–209–10.
- वहीं–पृ0–210–11.
- रोमिला थापर–अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन– पृ0–205–06.
- वहीं–पृ0–209–10.
- रामशरण शर्मा–प्रचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा और संस्थाएँ– पृ0–163–64.